REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

# शासकीय विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर चल रहे मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का विद्यार्थियों के प्रत्यक्षण के आधार पर मूल्यांकन

डॉ. मोहनलाल ठाकुर
प्राचार्य, मिलेनियम बीएड. कॉलेज, बुरहानपुर (म. प्र.)

*प्रस्तावना :*

*किसी भी व्यक्ति के द्वारा शिक्षा ग्रहण करने की शुरूआत प्राथमिक शिक्षा से ही होती है। अतः प्राथमिक स्तर की शिक्षा ग्रहण करना प्रत्येक व्यक्ति की अनिवार्य एवं मुलभूत आवश्यकता होती है। यदि हम इसे भारत जैसे विकासशील देश के परिप्रेक्ष्य में देखे तो यहाँ पर लाखों विद्यार्थी केवल प्राथमिक स्तर की शिक्षा भी प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इस कारण यहाँ विद्यालयों को अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या का सामना करना पड़ता है। सरकार इस समस्या को हल करने के लिए इस क्षेत्र में काफी प्रयास कर रही है ताकि सभी बच्चे प्राथमिक स्तर की शिक्षा को अनिवार्य रूप से ग्रहण कर सके। इसके लिये सरकार के द्वारा समय–समय पर कई कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं। सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों में मुख्य रूप से पढ़ना–बढ़ना, ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, राजीव गांधी शिक्षा मिशन आदि हैं।*

*शिक्षा के क्षेत्र में इन कार्यक्रमों के चलते रहने से प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या मे बढ़ोतरी तो हुई है परन्तु इस संख्या में आशा के अनुरूप वृध्दि नहीं हो पायी है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि भारत की 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती है तथा यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। भारत में कृषि प्रायः मानसून पर निर्भर करती है। अतः यदि यहाँ समय पर मानसून नहीं आता तो किसानों के लिये दो वक्त के भोजन की व्यवस्था करना भी मुश्किल हो जाता है व उन्हें गरीबी व भुखमरी का सामना करना पड़ता है। अतः ऐसी परिस्थिति में अपने बच्चों को प्राथमिक स्तर की शिक्षा दिलाना तो बहुत दूर की बात है। यदि बच्चों को समय पर भोजन नहीं मिलेगा तो वे शिक्षा कहाँ से ग्रहण करेगा। अतः इस समस्या को हल करने के लिये राज्य सरकारों ने आँगनवाड़ी एवं प्राथमिक शिक्षा केन्द्रो में बच्चों के लिये दलिया देने की व्यवस्था की परन्तु इससे भी विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की संख्या में कोई सार्थक वृध्दि नहीं हो पाई।*

*विद्यार्थियों को विद्यालयों में ही पर्याप्त मात्रा में भोजन मिल सके तथा प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की संख्या में सार्थक वृध्दि हो इस हेतु शासन के द्वारा ''मध्याह्न भोजन कार्यक्रम'' प्रारम्भ किया गया।*

*मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के तहत शासकीय विद्यालयों में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को दोपहर के भोजन के रूप में मध्याह्न भोजन दिये जाने की व्यवस्था है जिसमें दाल–रोटी, सब्जी आदि भोजन के रूप में दिया जाता है। मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के तहत भारत सरकार के द्वारा निःशुल्क गेहूँ तथा चावल परिवहन खर्च के लिये धनराशि दी जाती है।*

*मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के प्रारम्भ होने से लेकर अभी तक इस कार्यक्रम को लेकर समय–समय पर कई प्रश्न चिन्ह लगे हैं। समाचार–पत्रों में भी इस कार्यक्रम के बारे में समय–समय पर खबरें प्रकाशित होती रहती हैं जिनमें यह पढ़ने में आता है कि मध्याह्न भोजन के अंतर्गत दिये जाने वाले भोजन में कहीं मेंढक निकला तो कहीं कॉकरोच निकले तो कहीं भोजन का सेवन करने से विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ा। कई बार शासकीय विद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षक भी इस कार्यक्रम को लेकर अप्रसन्नता व्यक्त करते है। मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करने के लिये शोधकों के द्वारा विभिन्न शोध कार्य किये गये हैं। जिनमें सक्सेना एवं मित्तल (1985) ने '' मध्याह्न भोजन योजना का प्राथमिक स्तर पर छात्रों के प्रवेश एवं उपस्थिति पर प्रभाव का अध्ययन किया'', शर्मा एच.सी. (1982) ने ''प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के कक्षा में रहने का छात्रों की*

भर्ती एवं उपस्थिति पर प्रभाव का अध्ययन किया'' लाल (1986) ने ''प्रारम्भिक बाल्य शिक्षा, विद्यालयों में छात्रों की संख्या बढ़ाने के प्रयास का अध्ययन किया'', मण्डल (1980) ने ''बिहार में प्राथमिक स्तर पर सार्वजनिक मुक्त एवं अनिवार्य शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का अध्ययन किया'' राय (1987) ने, गाजीपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा का अध्ययन किया।

उपरोक्त शोध अध्ययनों से यह विदित होता है कि मूल्यांकन के क्षेत्र में हुए शोध अध्ययनों में शासकीय विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर चल रहे मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का विद्यार्थियों के प्रत्यक्षण के आधार पर मूल्यांकन पर कोई शोध कार्य पूर्व में नही हुआ है। इसलिये प्रस्तुत अध्ययन शासकीय विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर चल रहे मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का मूल्यांकन'' की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

## उद्देश्य –

इस शोध के निम्नलिखित उद्देश्य था –

1. मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का विद्यार्थियों की प्रतिकियाओं के आधार पर मूल्यांकन करना।

## अध्ययन की विधि –

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

## न्यादर्श –

प्रस्तुत अध्ययन इन्दौर शहर के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के दैव न्यादर्श पर किया गया।

शोधक के द्वारा 50 शासकीय प्राथमिक विद्यालयों को लिया गया। शोधकार्य हेतु 100 विद्यार्थियों, का चयन किया गया।

## उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु शोधक के द्वारा विद्यार्थियों से सम्बधित प्रश्नावली, का विकास किया गया।

## प्रदत्त संकलन विधि –

प्रदत्तों का संकलन शोधक के द्वारा न्यादर्श के रूप में चयनित इन्दौर शहर के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों से किया गया। इन शासकीय विद्यालयों में जाकर सर्वप्रथम विद्यालय के प्राचार्य से मिलकर उन्हें स्वयं के शोध के उद्देश्यों से अवगत करवाया गया। साथ ही उनसे शोध कार्य के लिये अनुमति ली गई। इसके बाद सम्बधित विद्यालय के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों से पहले तादात्म्य स्थापित किया गया व उन्हें शोधकार्य से सम्बधित सामान्य निर्देश देकर उनसे प्रश्नावली भरवाई गई।

## प्रदत्त विश्लेषण –

प्रंस्तुत शोध में प्रदत्त विश्लेषण हेतु आवृत्ति प्रतिशत एवं विषयवस्तु विश्लेषण विधि का उपयोग किया गया।

## परिणाम एवं विवेचना

प्रस्तुत शोध ''शासकीय विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर चल रहे मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का विद्यार्थियों के प्रत्यक्षण के आधार पर मूल्यांकन'' में इस शोध के उददेश्य– मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन करना, का आंकलन करने के लिए मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के सम्बन्ध में विद्याथियों से पूछे गए प्रश्नो से प्राप्त परिणामों को प्रस्तुत कर उनकी विवेचना की गई है। परिणामों को तालिका 1.1 से 1.13 में प्रस्तुत कर विवेचना की गई है।

*1.1.0 विद्यार्थियों से सम्बन्धित पूछे गये प्रश्नों से प्राप्त परिणाम एवं विवेचना तालिका 1.1 से तालिका 1.13 में दिये गये हैं –*

*तालिका 1.1 शासकीय विद्यालयों में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के अन्तर्गत मध्याह्न भोजन के समय को दर्शाती हुई तालिका*

| 1. विद्यालय में मध्याह्न भोजन का समय | | | |
|---|---|---|---|
| प्रातः | | दोपहर | |
| आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत |
| 47 | 47 % | 53 | 53 % |

*तालिका 1.1 को देखने से यह ज्ञात होता है कि अधिकाँश विद्यालय में भोजन दोपहर के समय ही दिया जाता है।*

*अतः मध्याह्न भोजन का समय विद्यालय में दोपहर का होता है। क्योंकि दोपहर के समय का प्रतिशत 53 प्रतिशत है जबकि प्रातः के समय का प्रतिशत 47 प्रतिशत है।*

*तालिका 1.2 शासकीय विद्यालयों में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के अंतर्गत मध्याह्न भोजन के प्रकार को दर्शाती हुई तालिका*

| 2. विद्यालय में भोजन के रूप में दी जाने वाली खाद्य सामग्री का प्रकार | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छाल–रोटी | | दाल–चावल | | सब्जी–रोटी | | खिचड़ी | | दलिया | |
| टावृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. |
| 39 | 39 % | 21 | 21 % | 26 | 9 % | 9 | 9 % | 5 | 5 % |

*तालिका 1.2 को देखने से ज्ञात होता है कि अधिकाँश विद्यालयों में मध्याह्न भोजन के रूप में 39 प्रतिशत विद्यालयों में दाल–रोटी, 21 प्रतिशत में दाल–चावल, 26 प्रतिशत में सब्जी–रोटी, 9 प्रतिशत में खिचड़ी व 5 प्रतिशत में दलिया दिया जाता है। अतः अधिकाँश विद्यालयों में मध्याह्न भोजन के रूप में दाल–रोटी दी जाती है।*

*संभावित कारण : इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि शासन द्वारा अधिकाँश शासकीय विद्यालयों में खाद्य सामग्री के रूप में दाल एवं आटे का वितरण किया जाता है।*

*तालिका 1.3 विद्यालय में दिए जाने भोजन की मात्रा को दर्शाती हुई तालिका*

| 3. विद्यालय में दिए जाने वाले भोजन की मात्रा | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दो रोटी–एक कटोरी दाल | | एक कटोरी दाल – एक प्लेट चावल | | एक प्लेट दलिया | | भरपेट खाना | |
| आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. |
| 44 | 44 % | 23 | 23 % | 11 | 11 % | 22 | 22 % |

*तालिका 1.3 को देखने से ज्ञात होता है कि अधिकाँश विद्यालयों में खाने के लिए दो रोटी तथा एक कटोरी दाल दी जाती है।*

*इसका कारण यह है कि यह योजना में तय है अतः उसके अनुसार ही भोजन दिया जाता है।*

*तालिका 1.4 विद्यालय में दिए जाने वाले भोजन की मात्रा से संतुष्टि की स्थिति को दर्शाती हुई तालिका*

| **4. विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन की मात्रा से संतुष्टि** | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हाँ | | नहीं | | अनिश्चित | |
| आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. |
| 33 | 33 % | 41 | 41 % | 26 | 26 % |

*तालिका 1.4 को देखने से यह ज्ञात होता है कि ज्यादातर विद्यालयों में विद्यार्थी भोजन की मात्रा से संतुष्ट नहीं हैं।*

*इसका कारण यह है कि बच्चों की बढ़ती उम्र होती है एवं इससे उन्हें ज्यादा भोजन की आवश्यकता होती है।*

*तालिका 1.5 विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन की स्वादिष्टता की स्थिति को दर्शाती हुई तालिका*

| **5. विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन की स्वादिष्टता** | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हाँ | | नहीं | | अनिश्चित | |
| आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. |
| 32 | 32 % | 37 | 37% | 31 | 31 % |

*तालिका 1.5 को देखने से यह ज्ञात होता है कि ज्यादातर विद्यालयों में दिया जाने वाला भोजन स्वादिष्ट नहीं होता है।*

*इसका संभावित कारण यह होता है कि भोजन निश्चित बजट में बनाना होता है एवं ज्यादा लोगों का एक साथ भी बनता है।*

*तालिका 1.6 विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन के समय में परिवर्तन की स्थिति को दर्शाती हुई तालिका*

| **6. विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन के समय में परिवर्तन** | | | |
|---|---|---|---|
| हाँ | | नहीं | |
| आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत |
| 46 | 46 % | 54 | 54 % |

*तालिका 1.6 को देखने से यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन के समय को परिवर्तित नहीं करना चाहते हैं।*

*इसका मूल कारण यह है कि भोजन मध्य समय में दिया जाता है एवं योजना के मूल में भी यही है कि मध्य समय पर भोजन मिले ताकि विद्यार्थी पूर्व में पढ़कर भोजन खाकर शेष समय भी विद्यालय में रुकें।*

*तालिका 1.7 विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन की मात्रा की आवश्यकता की स्थिति को दर्शाती हुई तालिका*

| **7. विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन की मात्रा की आवश्यकता** | | | |
|---|---|---|---|
| हाँ | | नहीं | |
| आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत |
| 69 | 69 % | 31 | 31 % |

*तालिका 1.7 को देखने से यह ज्ञात होता है कि ज्यादातर विद्यार्थी विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन की मात्रा को बढ़ाने के पक्ष में हैं।*

*इसका कारण उनकी उम्र में ज्यादा भोजन की आवश्यकता होती है।*

*तालिका 1.8 विद्यालय में भोजन के पश्चात् स्वास्थ्य पर प्रभाव की स्थिति को दर्शाती हुई तालिका*

| **8. विद्यालय में भोजन के पश्चात् स्वास्थ्य पर प्रभाव** | | | |
|---|---|---|---|
| हाँ | | नहीं | |
| आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत |
| 14 | 14 % | 86 | 86 % |

*तालिका 1.8 को देखने से यह ज्ञात होता है कि अधिकांश विद्यार्थियों का स्वास्थ्य भोजन के पश्चात् खराब नहीं हुआ है।*

*इसका कारण यह है कि भोजन शिक्षकों की देखरेख में बनता है एवं उसमें दूध से बनने वाले पदार्थों का उपयोग नहीं होता तथा आटे का उपयोग उसी दिन कर लिया जाता है।*

*तालिका 1.9 विद्यालय में मध्याह्न भोजन के पश्चात् स्वास्थ्य समस्या के प्रकार की स्थिति को दर्शाती हुई तालिका*

| **9. विद्यालय में स्वास्थ्य समस्या के प्रकार की स्थिति** | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिर दर्द | | पेट दर्द | | दस्त | | उल्टी | | कोई नहीं | |
| आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. |
| 5 | 5 % | 9 | 9 % | 7 | 7 % | 3 | 3 % | 76 | 76 % |

*तालिका 1.9 को देखने से ज्ञात होता है कि ज्यादातर विद्यार्थियों को किसी स्वास्थ्य समस्या का सामना नहीं करना पड़ा है।*

*तालिका 1.10 विद्यालय में चल रही मध्याह्न भोजन योजना से विद्यार्थियों के अध्ययन में आने वाली बाधा की स्थिति को दर्शाती हुई तालिका*

| **10. विद्यालय में चल रही मध्याह्न भोजन योजना से विद्यार्थियों के अध्ययन में आने वाली बाधा की स्थिति** | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हाँ | | नहीं | | अनिश्चित | |
| आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. | आवृत्ति | प्रति. |
| 45 | 45 % | 25 | 25 % | 30 | 30 % |

*तालिका 1.10 को देखने से यह ज्ञात होता है कि ज्यादातर विद्यार्थियों के अध्ययन में मध्याह्न भोजन योजना के कारण कोई बाधा नहीं आती है।*

*तालिका 1.11 विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन में ज्यादा नमक होने की स्थिति को दर्शाती हुई तालिका*

| **11. विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन में ज्यादा नमक होने की स्थिति** | | | |
|---|---|---|---|
| हाँ | | नहीं | |
| आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत |
| 9 | 9 % | 91 | 91 % |

*तालिका 1.11 को देखने से यह ज्ञात होता है कि ज्यादातर विद्यालयों में दिए जाने वाले भोजन में नमक सामान्य मात्रा में होता है।*

*तालिका 1.12 विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन में ज्यादा मिर्च होने की स्थिति को दर्शाती हुई तालिका*

| **12. विद्यालय में दिये जाने वाले भोजन में ज्यादा मिर्च होने की स्थिति को दर्शाती हुई तालिका** | | | |
|---|---|---|---|
| हाँ | | नहीं | |
| आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत |
| 7 | 7 % | 93 | 93 % |

*तालिका 1.12 को देखने से यह ज्ञात होता है कि ज्यादातर विद्यालयों में दिये जाने वाले भोजन में मिर्च सामान्य मात्रा में होती है।*

*तालिका 1.13 विद्यालय में नियमित समय पर भोजन दिए जाने की स्थिति को दर्शाती हुई तालिका*

| **13. विद्यालय में नियमित समय पर भोजन दिए जाने की स्थिति** | | | |
|---|---|---|---|
| हाँ | | नहीं | |
| आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत |
| 39 | 39 % | 61 | 61% |

*तालिका 1.13 को देखने से यह ज्ञात होता है कि ज्यादातर विद्यालयों में नियमित समय पर विद्यार्थियों को भोजन नहीं मिलता है।*

*अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि –*

1. *ज्यादातर विद्यालयों में मध्याह्न भोजन देने का समय दोपहर का होता है।*
2. *अधिकांश विद्यालयों में मध्याह्न भोजन के रूप में दाल–रोटी दी जाती है।*
3. *अधिकांश विद्यालयों में मध्याह्न भोजन में एक कटोरी दाल तथा दो रोटी दी जाती है।*
4. *ज्यादातर विद्यालयों में विद्यार्थी मध्याह्न भोजन के स्वाद से संतुष्ट नहीं पाए गये।*
5. *ज्यादातर विद्यालयों में विद्यार्थी दिये जाने वाले भोजन की मात्रा से संतुष्ट नहीं है क्योंकि उन्हें विद्यालय में भरपेट खाना नहीं मिल पाता है।*
6. *अधिकांश विद्यालयों में विद्यार्थी दिये जाने मध्याह्न भोजन के समय को परिवर्तीत नही करना चाहते है।*

7. *विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर मध्याह्न भोजन का कोई विशेष नकारात्मक प्रभाव नहीं पाया गया।*
8. *ज्यादातर विद्यालयों में मध्याह्न भोजन के कारण विद्यार्थियों के अध्ययन में बाधा पाई गई।*
9. *अधिकांश विद्यालयो में दिये जाने वाले भोजन में नमक एंव मिर्च सामान्य मात्रा में होता है।*
10. *अधिकांश विद्यालयों में प्रति विद्यार्थी 100 ग्राम भोजन हेतु व्यय दिया जाता है।*

## संदर्भ सूची


Buch, M.B. (ed) A survey of Reasearch in Education. Baroda : Centre of advanced study in Education 1974,

Buch, M.B. (ed) Second Survey of Research in Education. Baroda : Society for Education Research & Development, 1979.

Buch, M.B. (ed) Third Survey of Research in Education. New Delhi : National Council of Education Research & Training. 1986

Buch, M.B. (ed) Forh Survey of Research in Education Vol I & Vol II New Delhi : National Council of Education Research & Training. 1991.

NCERT : Fifth Servey of Research in Education. Trends Reports Vol. I New Delhi : National Council of Education Research & Training 1997

NCERT : Fifth Servey of Research in Education. Voll. II New Dehli : National Council of Education Research & Training 2000.

*पाठक, अलका : मध्यप्रदेश सरकार की शैक्षिक नीतियों का मूल्यांकन (वर्तमान सरकार के विशेष संदर्भ में) (1993) अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, शिक्षा संस्थान दे.अ.वि.वि., इंदौर*

*हुण्डलानी, धनवंती : ''राष्ट्र प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम द्वारा प्रौढ़ महिलाओं में जागरूकता''। (1983) अप्रकाशित एम. एड. लघु शोध प्रबंध, शिक्षा संस्थान दे.अ.वि.वि., इंदौर*

*भागवत, प्रेमलता : ''प्रौढ़ महिलाओं के सघन पाठ्यक्रम योजना सम्बन्धी कार्यक्रम का मूल्यांकन''। (1978) अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, शिक्षा संस्थान दे.अ.वि.वि., इंदौर*

*पाठक, पी.डी. : भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।(1998)*

*वैश्य, एम.एस. : शिक्षा की रूपरेखा, आशीष पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली। (1981)*

*मित्तल, एम.एल. : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ। (1998)*

*भाटिया, के.के. : आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, प्रकाश ब्रदर्स, पुस्तक बाजार लुधियाना। (1980)*

*अग्रवाल, बी.बी. : आधुनिक भारतीय शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा। (1995)*